बड़नावा से बेगंटी कि.मी. 310 DATE: PAGE NO: 155+155=310

Anand

ऑडियो/विडियो रिकॉर्डिंग और कलाकार विवरण पत्र

फोल्डर नं. 10 दिनांक 08/4/2021

ट्रैक नं:- 19ZOOM0019 स्थान बेंगटी

ट्रैकसमयावधि

कलाकार का नाम- यारमोमद (गायन/वादन) पिता का नाम-मेहरदीन

पता- गांव बेगंटी ते. फलोदी जिला जोधपुर

सहायक कलाकार

अनवर खां

ऑडियो रिकॉर्डिंग का समय

विषय- काव्य

विशेष - विवरण

यह काव्य जैसलमेर के ठाकर भाग जी पर आधारित है। बात उस समय की है जब उदयपुर के राजा एक अच्छे कवि की तलाश में होते है। तो वह अपने नौकरो से एक अच्छे कवि को तलाश करने निकल जाते है। तो वह काफी जगह ढूंढते है पर उसे नहीं मिलते है। कहीं से उसे किसी से उन नोकरो को भागजी के पास एक अच्छे बारट (कवि) होने का पता चलता है। तो वह लोग भागजी कोटड़िया के पास जाते है। और उनसे मुलाकात करते है तो देखते है। कि बारट और भागजी में बहुत प्रेम होता है। यह देखकर वह हैरान हो जाते है। कि एक बारट और ठाकर के बीच इतना प्रेम कैसे है।

वह लोग उस बारट को अपने साथ उदयपुर ले जाते है उस समय बारट के साथ अपना एक बेटा भी होता है। वह जाकर बारट बहुत ही अच्छी-अच्छी कविताएं करता है परन्तु भागजी का नाम भी लेता रहता है। यह देखकर राजा उससे केहता है कि तु बार-बार भागजी का नाम क्यों लेता है तुजे ऐसा क्या देता है। तो वह बारट केहता है कि मुझे 12 महीने में एक बोरी अनाज देता है। राजा बोलता है। मै तुम्हे एक रात के चार लाख रुपये दुंगा तु एक रात भागजी का नाम मत लेना।

बारट केहता ठीक है नहीं लूंगा उसका बेटा केहता है पापा बस एक रात की बात है आप उनका नाम मत लेना सुबह अपन चार लाख रुपये लेकर घर चले जायेगें इतने में रात हो जाती है तो वह अपनी कविता शुरू करता है काफी रात निकल जाती है वह भाग जी का नाम नहीं लेता है। इतने में उसे भाग जी की आवाज आती है और वह बोलता है

भागा आव मिले विले धड़ कोटड़े तु धणी
जासी फूल जड़े वासन जावे वागड़ी,

और राजा केहता की तुने अपना एक लाख रुपया गवा दिया उस बारट का बेटा भी अपने पिता से बहुत नाराज होता है और केहता है पिता जी आगे से भाग जी का नाम मत लेना नहीं तो एक लाख रुपया और कम हो जायेगा पिता जी केहता है ठीक है नहीं लूंगा। इतने मैं उदयपुर के राजा अपने महल जाते है और बारट उसे देखता है। तो उसे फिर से भाग जी कि याद आ जाती है और केहता है

धम-धम मेड़ी मे चढ़ो पग दे पावड़ियों
जाय मिलो ठाकर भागे सों गल दे बोगड़ियों

और वह अपना एक लाख रुपया फिर से गवा देता है राजा और बारट के बीच जो समझोता होता है इस बात कि खबर पेहले रानी को नहीं थी, लेकिन अब पता चल चुकी थी, इतने मे रात काफी बीत जाती है और उस बारट का लड़का अपने पिता से केहता है पिता जी अब दो लाख रुपये बच्चे है इसे मत गवाना आप भागजी का नाम सुबह होने तक मत लेना इतने में मुर्गे की आवाज बारट को सुनाई देती है और उसे फिर से भाग जी कि याद आती है और वह केहता है।

तु क्यों बोल्यो रे कुकड़ा ढलती मोय मराड़
का थने बिल्लड़ी जड़फियों का भाग ज्यूं बेराग

वह मुर्गे से केहता है या तो तुझे बिल्ली ने जकड़ा है या तुझे भी मेरी तरह बेराग्य है।

और वह अपना तीन लाख रुपया गवा देता है। और बेटा केहता है अब सिर्फ एक लाख रुपया ही बच्चा है इसे ले मत गवाना। इतने में वह राजा जी के साथ नहाने जाता है और नहाने के बाद वह राजा जी के कपड़े पहनने लगता है। तो राजा जी उससे केहता है कि यह मेरी पोशाक है आपके कपड़े उधर है। और इसे भाग जी की याद आजी है। और केहता है।

" किमकर किमकर किम करों किमकर करो बाखोण भारा म्हारा नहीं किया ए भाग तणा खेलोण,,

और इसने मन में दुख जताया। भाग जी ने तो कभी भारा-म्हारा किया है नहीं। इस तरह वह अपना चार लाख का इनाम गवा देता है और वहां से रवाना हो जाता है। तो रानी साहेबा उसे बुलाती है और उसे चार लाख रुपये का इनाम देती है और राजा से कहती है कि कवियों में तो प्रेम है। मगर राजाओं में प्रेम नहीं है।

इस तरह वह चार लाख का इनाम पाकर वापस भाग जी के पास जाता है और इनपना जीवन यापन करता है।